पटरी पर लौटी जिन्दगी

– अजीत

पहले हफ्ते में, मैं आश्वस्त था कि शायद एक–आध हफ्ते में चीजें पटरी पर आ जाएंगी पर समय प्रतिकूल होता जा रहा था और कोरोना भयावह रूप में सामने आ रहा था।

कोरोना के बारे में सबसे पहले कक्षा 9 के बच्चों के साथ बातचीत की थी। उस समय इसकी भयावहता का तनिक भी आभास नहीं था। उसके बाद स्कूल में होली की छुट्टियों के दौरान अपने गांव आया और बच्चों के बेहतर भविष्य की उम्मीदों के साथ, जो अक्सर हर मां–बाप का सपना होता है वापस परिवार के साथ दिनेशपुर लौट आया। परिवार साथ होने से मुझे भी घर के रोजमर्रा के अधिकांश कार्यों से राहत मिल गई थी। समय पर नाश्ता, समय पर खाना, बच्चों के साथ समय व्यतीत करना दिनचर्या का हिस्सा था। बिटिया का प्रवेश अपने स्कूल में हो गया था तो नये टीचर और बड़ा स्कूल देखकर वह बहुत खुश भी लग रही थी, साथ ही बाजार की रौनक ने भी उसके बाल मन में आकर्षण और कौतूहल पैदा कर दिया था। मेरे साथ बाजार जाने के लिए मुझसे पहले तैयार हो जाया करती थी। दिनचर्या एक नियमितता की ओर अग्रसर हो ही रही थी कि यहां पर पहुंचने के छह–सात दिन बाद कोरोना वायरस के कारण पहले जनता कर्फ्यू और फिर लॉकडाउन एक प्रकार से सभी के लिए अपने–अपने घरों में कैद की शुरुआत हो गयी। स्कूल को भी तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए बंद कर दिया गया।

पहले हफ्ते में मैं आश्वस्त था कि शायद एक–आध हफ्ते में चीजें पटरी पर आ जाएंगी पर समय प्रतिकूल होता जा रहा था और कोरोना भयावह रूप में सामने आ रहा था। इसी बीच स्कूल ने ऑनलाइन पढ़ाई के सहारे बच्चों को व्यस्त रखने का कार्यक्रम तय किया। साथ–साथ शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास के लिए वार्तालाप, चर्चाएं, अंग्रेजी के सत्र, कहानियां सुनाना, वेबिनार और भी अनेक प्रकार के क्रियाकलाप ऑनलाइन शुरू कर दिए इसका फायदा यह हुआ कि वेब की दुनिया की टार्मिनॉलोजी और नए–नए एप्स की जानकारी के साथ–साथ टाइपिंग करने की गति में बढ़ोत्तरी हो गई। लॉकडाउन की इस

फोटोः अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

अवधि में परिवार के साथ समय बिताने का एक मौका मिल गया था, साथ–साथ अनेक आर्टिकल भी पढ़ने को मिले, बच्चे साथ होने से बच्चों के मनोविज्ञान और क्रियाकलाप को और गहराई से समझने का मौका मिला। इस प्रकार पहला फिर दूसरा हफ्ता भी सामान्य रूप से निकल गया लेकिन तीसरे हफ्ते में एक बेचैनी और अनजाना डर मन पर हावी होने लगा जो कि बच्चों की सुरक्षा को लेकर था घर से बाहर निकलना होता तो तब भी डर और घर के अंदर आओ तब भी बच्चे जो पहाड़ की स्वतंत्रता के आदी थे भला कब घर के अन्दर और कब तक इस नीरस बंधन में बंधना पसंद करते। शायद यही कारण था कि एक दिन बिटिया ने पूछ ही लिया कि पापा हम घर कब जाएंगे? मैंने जवाब दिया– घर क्यों जाना, स्कूल खुलेगा तो तू स्कूल जाएगी, वहां तेरे बहुत सारे दोस्त होंगे बाद में जब यहां गर्मी होगी तब जाएंगे... फिर इसके आगे उसने कुछ पूछा तो नहीं पर शायद कई और प्रश्न भी उसके मन में उमड़ रहे थे। फिर शाम को एक आध–किलोमीटर दौड़ना और फिर बच्चों के साथ बाहर सड़क जो कि किनारे का मकान खाली होने से खाली रहती थी उस पर बच्चों के साथ खेलना दिनचर्या में

शामिल तो कर लिया पर उसके सवाल ने मुझे महसूस करा दिया था बच्चे भी अब बंद कमरे की कैद में मानसिक तनाव झेल रहे हैं। घर पर माता–पिता भी हम सभी को लेकर बहुत परेशान थे और उनको भी ऐसे समय में देखभाल की जरूरत थी। मैंने महसूस किया कि अभी बच्चों के लिए गांव ही सबसे सुरक्षित जगह रहेगा। फिलहाल गांव जाने के साधन की तलाश करना शुरू कर दिया। इधर अब तक देश की स्थिति काफी बदल चुकी थीं। ट्रांसपोर्ट के सभी साधन बंद हो चुके थे, दुकानें बंद थी, स्कूल बंद, छोटी मोटी कंपनियों से लेकर उद्योग धंधे बंद हो चुके थे और शहर, गांव घर की ओर मुड़ चला था। कितने नंगे पांव, भूखे पेट गांव घर की ओर चल पड़े थे। कई के रास्ते में ही प्राण पखेरू उड़ चले थे तो कुछ मीलों पैदल चलकर घर की देहरी तक पहुंच पाए थे। हजारों लोग संक्रमण की चपेट में आ गए थे, बच्चे, बड़े–बूड़े सभी एक डर के साये में जीवन की सांसें गिन रहे थे।

ऐसी परिस्थितियों में घर से बाहर जाना एक प्रकार से खतरे से खाली न था। इधर एक दिन बाजार जाते समय मकान मालिक ने अपना राशन कार्ड थमाते हुए कहा कि जरा रास्ते में सस्ते गल्ले की दुकान होकर भी आना कुछ राशन मिल रहा हो तो, लेते आना। जब वहां पहुंचा तो दस–बारह लोग ही लाइन में खड़े थे और मेरे ठीक पहले एक चौदह–पन्द्रह साल का लड़का लाइन में खड़ा था जब उसका नंबर आया तो उसने राशन भरा और पैसे देने बैठा तो उसके पास दस रुपये के तीन–चार नोट और दस–पन्द्रह सिक्के ही थे। जब राशन देने वाले ने उनको गिना तो उसमें तीस रुपये कम निकले बाकी पैसे देने को कहा पर लड़के ने कहा पैसे नहीं हैं और बाद में देने की विनती करने लगा पर वह नहीं माना और राशन वापस लेते हुए बोला कि पहले पूरे पैसे लाओ तब राशन मिलेगा। उस लड़के के पहनावे और उन सिक्कों की संख्या से उसके घर की आर्थिक स्थिति का कुछ हद तक अंदाजा लगाया जा सकता था। मैं ये सब देखते हुए सोच रहा था कि क्या पता घर में पैसा न बचा हो और खाने की समस्या भी हो, नहीं तो ये लड़का अब तक पैसे लेने के लिए घर चले जाता वो वहीं खड़े होकर चुपचाप कुछ सोच रहा था तभी मेरा नम्बर आया। मैंने वो राशन भरा और पैसे देते समय उस लड़के के तीस रुपये भी चुका दिए। ग्रेन डीलर ने लड़के को बुलाया और उसके राशन को वापस लौटा दिया। लड़के की समझ में नहीं आया कि अब कैसे बिना पैसे दिए डीलर उसे राशन दे रहा है और न मैंने उसे बताने की जरूरत समझी। लेकिन इस घटना ने शायद मुझे उस दिन अपने स्कूल के उन बच्चों के बारे में विचार करने को बाध्य किया जो इसी प्रकार की संकट से जूझ रहे होंगे। बाद में पता चला कि संस्था ऐसे बच्चों की मदद के लिए आगे आई है तो सच में मन को एक संतोष प्राप्त हुआ।

इधर वाहन की व्यवस्था घर जाने के लिए हो गई थी अतः हम लोग 3:00 बजे सुबह घर के लिए निकले तो रास्ते में हल्द्वानी के आसपास कोई जगह रही होगी जहां की रोड पर कई लोग उस अंधेरे में भी सर पर गठरी लिये हुए पैदल बच्चों का हाथ पकड़कर लगातार चल रहे थे। ऐसे में, मैं सोच रहा था कि आखिर इन बच्चों का क्या कसूर लेकिन इस कोरोना ने उन कम्पनियों की हकीकत भी बयां कर दी थी जिन्होंने पहले भी मजदूर वर्ग का खून चूसा था और अब भी उनके प्रति न कोई सहानुभूति थी न जिम्मेदारी।

रास्ते में कई जगह थर्मल स्क्रीनिंग हुई अन्य सरकारी औपचारिकताएं पूरी करते करते शाम को चार बजे के आसपास हम लोग गाड़ी से उतरे तो गांव की निगरानी समिति के तीन चार लोग रास्ते में एक–आध किलोमीटर पहले हमारी निगरानी के लिये आ गए और बहुत सारे निर्देश हमें दिए और मजा तो तब आया जब पता चला निर्देश देने वाले ने हाल ही में एक दिन पहले निर्देशों का उल्लंघन किया था, लेकिन जिम्मेदार नागरिक होने के नाते निर्देशों– नियमों का पालन करना था और हम सपरिवार होम क्वारेन्टाइन हो गए साथ ही घर के सभी रास्तों पर सूचना चस्पा कर दी गई कि यह मार्ग पूर्णतः प्रतिबंधित है। आश्चर्य के साथ कोरोना का साइड इफैक्ट और करीब से तब जान पाया जब करीब के रिश्तेदार भी बात करने को कतराने लगे थे इस प्रकार एक अलग नजरिया विकसित हो गया था गांव में बाहर से आने वालों के लिए। क्वारेन्टाइन के चौदह दिन घर में पूरे किये और फिर गांव में खेती–बाड़ी के कार्य में व्यस्त हो गए। बच्चे भी घर पर दादा–दादी के साथ और कुछ पुराने दोस्तों के साथ खुश थे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी स्कूल ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)